Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 4, October-2023, ISSN 2230-7540

पर्यावरण संरक्षण में भारतीय महिलाओं की भागीदारी

डॉ. समृद्धि दाधीच[1*], सुनिल[2]

[1] अनुसंधान पर्यवेक्षक, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़

[2] अनुसंधान विद्वान, श्री खुशाल दास यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़

***सारांश** - पर्यावरण मानव जीवन पद्धति के लिए यदि अनिवार्य अंग है तो इसका संरक्षण और बचाव भी मानव का परम कत्तव्य बन जाता है। पर्यावरण संरक्षण मानवीय जीवन के लिए अति आवश्यक विषय-वस्तु बन गया है। इस दिशा में वैश्विक एवं भारत दोनों ही स्तरों पर अनेक प्रयास एवं आन्दोलन अनवरत जारी है। पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं के नेतृत्व को प्रोत्साहित करने के लिए भी उन्हें वन विभाग सेवाओं के उच्च पदों पर आसीन किया जाए तथा विभिन्न पर्यावरण सम्बन्धी कार्यक्रमों सम्मेलनों एवं पर्यावरणीय अभिकरणों में उनकी अधिक से अधिक सहभागिता के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाए जिससे कि पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं द्वारा किए गए प्रयासों का वास्तविक रूप में सहयोग मिल सके और पर्यावरण को बचाकर भारत को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को वैश्विक तपन (ग्लोबलवार्मिंग) के बढ़ते दुष्प्रभाव से बचाया जा सके और परिणामस्वरूप एक ग्रीन एवं समृद्ध विश्व का निर्माण हो सके।*

***मुख्य शब्द** - पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण एवं महिलाएँ, पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान*

----------X----------

प्रस्तावना

अगर हम अपने चारों तरफ देखें तो ईश्वर की बनाई इस अद्भूत पर्यावरण की सुंदरता देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। पर्यावरण की गोद में सुंदर फल फूल, लहराती लतायें, हरे भरे वृक्ष, चहचहाते पक्षी वनस्पतियों का फैला आवरण, बहता झरना, कल कल करती नदियां, सब कुछ किना आकर्षक, कितना मनमोहन प्रतीत होता है।

इसी आकर्षक तथा रमणीय वातावरण को दखेते हुए, अपनी दादी नानी से प्रकृति की मनोरम कहानियॉ बताते हुए और इसी प्रकृति की गोद में खेलते हुए मानव ने अपना बचपन व्यतीत किया और धीरे-धीरे अपने कर्तव्य प्रगति के पथ पर अग्रसर किया, अपने जीवन के उच्च लक्ष्यों को प्राप्त किया लेकिन इस पथ पर चलते-चलते उचाईयों के शिखर को छूने के साथ ही मानव की जिज्ञासाएं, अभिलाषाएं भी बढ़ने लगी। अपनी बढ़ती जिज्ञासाओं की पूर्ति करने के लिए मानव ने प्रकृति की इस अनुपम सौन्दर्यमयी छटा में हस्तक्षेप करना शुरू किया। मानव के बढ़ते हुए हस्तक्षेप के कारण प्रकृति की अद्भुत छटा पर, अनुपम सौन्दर्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा था। पर्यावरणीय आकर्षण कहीं खोने लगा और अब इस हस्तक्षेप का परिणाम हमारे सामने है।

पर्यावरण में बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप के दुष्परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यक महसूस की जाने लगी और इसी के फलस्वरूप विभिन्न प्रयास आरम्भ हुए -

विश्व स्तरीय प्रयत्न

विकासशील देशों में पर्यावरण संरक्षण के अन्तर्गत ही विकास की गति बढ़नी चाहिए और पर्यावरण समस्त मानव जाति की समस्या है। इस संकल्पना के अभ्युदय ने पर्यावरण के प्रति मानव की जागरूकता को बढ़ाया ही साथ ही एक नये आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।

संयुक्त राष्ट्र की साधारण सभी में 3 दिसम्बर 1968 को विश्व मानव पर्यावरण कन्वेंशन बुलाने का संकल्प लिया गया जिसकी रिपोर्ट 26 मई 1969 को साधारण सभा को सौपी गई। जिसे 15 दिसम्बर 1969 को स्वीकार कर लिया गया और इसके अनुसरणर में पर्यावरण संरक्षण के

www.ignited.in

क्षेत्र में कार्य करने के लिए 27 सदस्यीय समिति का गठन किया गया जिसने पर्यावरण संरक्षण की एक कारगार योजना पर बल दिया।

स्वीडन के स्टॉकहोम शहर में 1972 में एक सम्मेलन हुआ जिसमें 119 देशों ने हिस्सा लिया और एक ही पृथ्वी की भावना को अपना। इसी सम्मेलन मे 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाए जाने का संकल्प पारित किया गया।

राष्ट्र स्तरीय प्रयत्न

पर्यावरण संरक्षण के विश्व स्तरीय प्रयासों को प्रत्येक देश ने अपने स्तर पर अपनाया तथा इस दिशा में प्रयत्न आरम्भ किए। हमारा संविधान लागू हुआ था 1950 में लेकिन तब उसमें पर्यावरण संरक्षण का विचार नहीं जुड़ा था। सन 1972 में सम्पन्न हुए स्टॉकहोम में भारत सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान दिया गया और 1976 में संविधान में संशोधन कर नये अनुच्छेद जोड़े गए थे- 48(।) तथा 51(ळ)। अनुच्छेद 48(।) सरकार को निर्देश देता है कि पर्यावरण की सुरक्षा करें और उसमें सुधार के लिए कार्य करें और अनुच्छेद 51। (ळ) नागरिकों के लिए है कि वह हमारे पर्यावरण की रक्षा करे।

भारतीय संस्कृति महिलाएं तथा पर्यावरण

संविधान संशोधन से पूर्व से ही अगर हम एक नजर अपने भारतीय इतिहास को देखें तो पाएंगे कि हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति पर्यावरण के प्रति कितनी सजग रहीं है और इसमें भी विशेषकर महिलाए। क्योंकि महिलाआंे का प्रकृति से जुडाव सर्वविदित है। महिलाएं प्राचीनकाल से ही पर्यावरण के प्रति जागरूक रहीं है। प्राचीन काल से ही भारतीयों ने विशेषकर भारतीय महिलाओं ने प्रकृति पूजा को महत्व दिया है। महिलाओं द्वारा व्रत त्यौहार के अवसर पर या दैनिक जीवन जीवन में भी पूजा अर्चना ने अनेक वृक्षों जैसे- पीपल, तुलसी, आंवला, अशोक, बेलगिरी, नीम, आम को पूजा जाता रहा है। साथ ही विभिन्न पशु-पक्षियों जैसे- बैल गाय, हाथी, घोड़ा, चूहा, सांप, उल्लू इन सब से भी उनकी धार्मिक आस्था के कारण इन पेड पौधो तथा पक्षियों को संरक्षण प्राप्त हो जाता है। इनके संरक्षण के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति में तो जल स्त्रोतों को भी संरक्षण प्राप्त है यथा कुआं-पूजन, गंगा-पुजन इत्यादि।

- इन सबसे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न परम्पराओं का निर्वहन करते हुए भारतीय महिलाएं पर्यावरण संरक्षण में महहत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है।
- महिलाएं हमेशा से पर्यावरण संरक्षण में आगे रहीं है और अपने अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देती रहीं है।
- पर्यावरण के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका को अलग अलग विद्वानों ने परिभाषित किया है।
- कार्ल माक्र्स के अनुसार, 'कोई भी बड़ा सामाजिक परिवर्तन महिलाओं के बिना नहीं हो सकता है।
- काॅफी अन्नान के अनुसार, इस ग्रह का भविष्य महिलाओं पर निर्भर है।
- रियो डी जिनेरियो,पर्यावरण प्रबन्धन और विकास मे महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए सतत विकास को प्राप्त करने के लिए उनकी पूर्ण भागीदारी आवश्यक है।
- इस प्रकार स्पष्ट है कि पर्यावरण संरक्षण मे महिलआएं अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है और उनके योगदान से हम पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते है।

महिलाओं द्वारा किए गए पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित आन्दोलन

भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित आन्दोलन हुए जिसकी प्रणेता महिलाएं रहीं है। उनमें कुछ आन्दोलन निम्नांकित हैः-

- **खेजडली आन्दोलन**

यह आन्दोलन राजस्थान में पर्यावरण चेतना का अतुलनीय उदाहरण है जो कि राजस्थान के खेजडली गांव में स्थानीय लोगो द्वारा किया गया। सन् 1730 में जोधपुर के महाराजा द्वारा बनाए जा रहे महल के निर्माण हेतु लकड़ी लेने के लिए उसके सिपाही खेजड़ली

www.ignited.in

गांव पहुँचे जहां खेजड़ी के वृक्ष बहुतायत में थे किन्तु गांव की महिला अमृता देवी ने सिपाहियों का विरोध किया और अपनी तीनों पुत्रियों सहित वृक्षों पर लिपट गई। वृक्षों को बचाने हेतु उन्होने अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस खबर के प्रचारित होते ही 363 लोगों ने भी वृक्ष संरक्षण हेतु अपने प्राणों को त्याग दिया। जब महाराजा को यह खबर प्राप्त हुई तो उसने उस क्षेत्र में वन काटने पर रोक लगा दी थी।

- **चिपकों आन्दोलन**

"प्राण जाए पर वृक्ष न जाये" की भावना पर आधारित यह आन्दोलन तत्कालीन उत्तर प्रदेश के **"चमोती"** नामक स्थान पर सन् 1973 में प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन के प्रणेता श्री सुन्दर लाल बहुगुणा थे किन्तु महिलाओं ने इस आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसे **"ईकों फेमिनिस्ट"** भी कहा जाता है क्योंकि इसकी अधिकांश कार्यकर्ता महिलाएं थी और सबसे बड़ी बात यह है कि इस आन्दोलन का संचालन करने वाली सारी महिलाएं, पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्रों की रहने वाली निरक्षर व अनपढ़ महिलाएं है यह अहिंसक आन्दोलन विश्व के इतिहास को महिलाओं की अनुठी देन है। इसकी अगुआ गायत्री देवी है जिन्होने घोषणा की है कि जंगलों व पर्यावरण की रक्षा हेतु उनका संघर्ष निरन्तर जारी रहेगा।

- **नवधान्या आन्दोलन**

इसकी प्रणेता वन्दना शिवा है। जो कि 1987 से इसे चला रही है। नवधान्या का अर्थ है "नौ बीज" इस आन्दोलन के अन्तर्गत जैविक खेती के लिए व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया जाता हैं। यह महिला केन्द्रर्रित आन्दोलन है जो कि जैविक एवं सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण का कार्य कर रहा है।

- **नर्मदा बचाओं आन्दोलन**

इस आन्दोलन की प्रणेता "मेधा पाटकर" है जो कि गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। सरदार सरोवर परियोजना के कारण, वर्धा के स्थानीय पर्यावरण संरक्षण के लिए आवाज उठाने के कारण पर्यारणविद के रूप में अधिक जाना जाता है। इतना ही नही ऊसर भूमि को हरे भरे खेतों में बदलने वाली उदयपुर क्षेत्र की भील महिलाओं, देवदर के वृक्षों को काटने से बचाने वाली हिमाचल प्रदेश की महिलाओं का योगदान भी अहम स्थान रखता है।

आधुनिक शिक्षित महिला तथा पर्यावरण

वर्तमान के भौतिकवादी युग में आवश्यकता है पर्यावरण संरक्षण के प्रति पुनः कुछ कदम उठाने की और इसकी पहल महिलाओं को ही करनी होगी क्योंकि एक महिला अपने आचार व्यवहार से न केवल अपने परिवार को प्रभावित करती है बल्कि देश काल को भी प्रभावित करती रही है। जिस सोच समझ का महिला चिंतन करती है उसी के अनुरूप समाज को सोच हो जाती है। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में तो हमारे समाज की महिलाएं रामबाण है क्योंकि वे अपने बच्चे की प्रथम गुरू होती है यदि नही गुरू बच्चों में पर्यावरण एवं जल संरक्षण को उनकों संस्कारों में शामिल करे तो न केवल वर्तमान पीढी अपितु आने वाली पीढियों के लिए भी एक सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकते है। इसीलिए 21वीं सदी की महिला को इस आधुनिकीकरण के साथ-साथ उन पारम्परिक आदर्शो को भी अपनाना चाहिए जो वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की भी जरूरत है। इसके लिए आवश्यकता है।

जागरूकता की, महिला सशक्तिकरण की। जब महिलाएं पर्यावरण संरक्षण और जीर्णोद्धार से सम्बन्धित और कार्यक्रमों में भागीदारी बनेंगी तो प्रभाव तथा बदलाव दोनों क्रान्तिकारी सिद्ध होंगे और तब हम अवश्य ही सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त कर पाएंगे। इसके अलावा अगर महिलाएं शिक्षित और जागरूक होगी तो वे खुद उचित फैसले लेन में सक्षम होगी। इस सम्बन्ध में जलवायु अनुसंधान संगठन "प्रोजेक्ट ड्राडाउन" मे कहा गया है- "शिक्षा लचीलापन भी बढ़ाती है। और लड़कियों तथा महिलाओं को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का सामना करने के लिए तैयार करती है"। ड्राडाउन का अनुमान है कि लड़कियों की शिक्षा और परिवार नियोजन पर काम करने से 2050 तक 85 गीगाटन कार्बन उत्सर्जन कम किया जा सकता है।

शिक्षित तथा जागरूक महिल अगर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होगी तो वे परिवार नियोजन के प्रति भी जागरूक होगी। धीमी जनसंख्या वृद्धि दर से परिस्थितिक तन्त्र पर भी दबाव कम पड़ता है, जिससे संसाधनों का अत्यधिक दोहन नहीं होता है। संसाधनों की बचत से वे अपने परिवार को बेहतर पोषण तथा वितिय स्थिरता प्रदान कर सकती है।

इन्टरनेशनल यूनियन ऑफ कंजरवेशन ऑफ नेचर के मुताबिक राष्ट्रीय सरकारों से लेकर स्थानीय सामुदायिक

www.ignited.in

समूहों में निर्णय लेने में महिलाओं को बहुत कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है। उदाहरण के लिए दुनियाभर के संसदों में निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी 25 प्रतिशत से भी कम है। इसके अलावा दुनियाभर में पर्यावरण सम्बन्धित सेक्टरों में महिलाएं शीर्ष स्तर के मंत्रीपदों से लेकर जिला य सामुदायिक स्तर की समितियों में केवल 12 प्रतिशत प्रतिनिधित्व ही रखती है जो कि औसत से काफी कम है। जब प्राकृतिक संसाधनों और परिस्थितिकी तंत्र के प्रबन्धन की बात आती है। तो महिलाओं की जरूरतों, प्राथमिकताओं और ज्ञान को अक्सर नजर अन्दाज कर दिया जाता है जिसके स्थायी प्रबंन्धन के समाधानों पर भी प्रभाव देखने को मिलते है इसका सीधा सादा सा मतलब है कि अभी आधी आबादी पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी फैसले लेने से वंचित है।

महिलाएं हमेशा से पर्यावरण के हित में काम कर रही है। क्योंकि महिलाओं का प्रकृति से जुड़ाव अनमोल होता है।

महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान देकर तथा लैंगिक भेद भाव को खत्म करके पर्यावरण संरक्षण में उनकी भागीदारी को ओर भी बढाया जा सकता हैं।

संदर्भ सूची

पर्यावरण विधि - मदन लाल/विधि साहित्य प्रकाशन, विधि और न्याय मंत्रालय, भारत सरकार।
विज्ञान प्रगति, जून 2018
India water portal पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका, 27.03.2016
Feminism in india, जून 16, 2020
Feminism in india, जून 09, 2021

The circle of empowerment] कॉफी अन्नान, 2007

Corresponding Author

डॉ. **समृद्धि दाधीच***

अनुसंधान पर्यवेक्षक, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़

www.ignited.in